मृत्यु

मृत्यु हमारा
भला करने आती है
फिर भला हम
मृत्यु से क्यों डरें
इस पुराने महल से निकालकर
वह हमें
नया महल देती है
फिर भी लोग
मृत्यु को भला नहीं मानते है,
शायद
लोगों को नयापन
चर्चा में ही पसंद है
हकीकत में नहीं

मरण

जब मेरे अंदर कायरता थी
तब मैं
हर वर्ष
हर दिन
हर पल मरता था,
मगर
जब से मेरे अंदर
वीरता आई है
तब से मुझे विश्वास है
अब मैं
बार-बार नही मरुँगा
मैं तो
सिर्फ एक बार मरुँगा
वो भी अंत में बड़ी-शान से

मौत

मौत
हर किसी के पास आती है
हर किसी को लेकर जाती है
फिर भी
देखो तो
मौत को
कोई नहीं देख पाता है

जीकर मरा जाए

जीवन के हर एक पल को
मरकर नहीं
जीकर जिया जाये,
मरना तो है ही
क्यों न
जीकर मरा जाये

सीढ़ी

मौत कोई झंझट नहीं
मौत एक अहसास है
नई जिन्दगी के आने का,
मौत कोई मातम नहीं
मौत एक उत्सव है
नई खुशियों के आने का,
मौत कोई कायरता नहीं
मौत एक वीरता है
खुशी-खुशी मरने की,
मौत कोई विकल्प नहीं है
मौत तो एक सीढ़ी है
नई मौत तक जाने की

चरम युद्ध

जीवन की इस दौड़ में
बस एक लड़ाई अब बाकी है
वह है मौत की लड़ाई,
जिसने मौत को जीत लिया है
उसे कभी कोई
हरा नही सकता

मैं नहीं डरता

जीवन के
इस सफर में
कुछ लोग
मौत से डरते है
मगर
मैं नही डरता,
क्योंकि
मैं जानता हूँ
जीवन और मौत की लड़ाई में
जीतती मौत ही है,
लेकिन
जो मरते-मरते भी
जीता है
वह हारकर भी जीतता है

संभल जाओ

अपनों की मृत्यु पर
रोइये मत,
मृत्यु होना
कोई नयी बात नहीं है,
उस समय
यही सोचिये
संभल जाओ
तुम्हारे दिन भी नजदीक है

बार-बार मरण

किसी ने पूछा -
क्यों मरते है,
मैने कहा -
मरने पर भी
हमारी आशायें
ज़िंदा रहती है
शायद इसीलिए हम
बार-बार मरते हैं

मौत अच्छी है

मौत अच्छी है
पर कलंक अच्छा नहीं है,
मौत के आने पर
आदमी एक बार में
मर जाता है
मगर कलंक आदमी को
हर पल मारता है

मौत की आँधी

मौत की आँधी
जब आती है
जिन्दगी के उद्यान को
उजाड़ जाती है,
वातायन में
मायूसी सी छा जाती है
मगर अगले ही क्षण
नई जिन्दगी प्रारंभ हो जाती है,
ऐसा नहीं
कि इस बार
मौत की आंधी नही आएगी
वह तो आएगी
पर इस बार
वातायन में
मायूसी नही छाएगी,

क्योंकि
हर बार
मौत खुद आती थी
इस बार
मौत को मैं खुद बुलाऊँगा
इस नजारे को देखकर
हर किसी का मन
बस यही चाहेगा
मरे तो हम भी कई बार है
मगर
ऐसा मरण हमारा कब आएगा

मरण बड़ी बात नहीं

जन्म लेकर मर जाना
कोई बड़ी बात नही,
हो सके तो तुम
अपना वर्तमान
कुछ ऐसा जियों
जो इतिहास बन जाए

मौत भी तब तक

मैंने पूछा मौत से -
तुब कब तक आती रहोगी
मौत ने मुस्कुराकर कहा -
जब तक
तुम जिंदा होते रहोगे
मैं भी आती रहूँगी
तुम जिंदा होना छोड़ दो
मैं भी आना छोड़ दूँगी।
सच है -
जब तक जिन्दगी रहेगी
मौत भी तभी तक रहेगी

दोषारोपण

जब कोई मरता है
तब हम
जिन्दगी को दोष देते है
जबकि
जिन्दगी कभी
धोखा नहीं देती
धोखा तो
साँसे देती है
और
हम व्यर्थ में
जिन्दगी को दोष देते है
जिन्दगी तो
साँसों के खत्म होने पर भी
चलती रहती है

लड़ाई

जीवन में होने वाली
लड़ाइयों से लड़कर
आप जरूर जीत सकते है,
मगर
जीवन से होनेवाली लड़ाइयों में
सिर्फ और सिर्फ
मौत ही जीतती है

स्वागत

जो लोग मौत का स्वागत
ठाठ-बाट से करते है,
उन्हें ही मृत्यु
बार-बार लेने नहीं आती

अपेक्षा

जो आपनी जिन्दगी
खुश होकर जीते है
मौत उन्हें
थोडी देर से
लेने आती है
और
जो अपनी जिन्दगी
मायूस होकर जीते है
मौत उन्हें अपने साथ
थोड़ा जल्दी ही
जे जाती है
आप समझ ही गए होंगे
मैं आपसे कैसे जीवन की
अपेक्षा कर रहा हूँ

अमर

आपने जन्म लिया है
तो मरण भी होगा,
लेकिन
मरण के पहले
जन्म सफल करना हो
तो समय बर्बाद न करके
हर समय
बेहतर से बेहतर काम को
अंजाम देना होगा,
ऐसा करने से
आपका जन्म सफल होगा
और
काम के साथ-साथ
नाम भी अमर होगा

मृत्यु सुख है

मृत्यु को दुःख नहीं
सुख मानो,
क्योंकि
सड़े-गले शरीर से
छुटकारा दिलाने वाली
मृत्यु ही होती है

मौत का स्वागत

मौत का डर
उन्हें ही होता है
जो मौत के स्वागत के लिए
तैयार नहीं रहते है,
जिन्होंने भी
आज तक मौत का स्वागत किया है
वो उन्हें खुशी-खुशी ले गई
जिन्होंने नहीं किया
मौत का स्वागत
वो उन्हें भी ले गई
मगर
रूला-रूलाकर ही ले गई

धोखा

जिन्दगी से किये
हर एक वादे को निभाना
मुझे बखूबी आता है,
मगर
मलाल इस बात का है
जिन्दगी ही हर बार मुझे
धोखा दे जाती है

बार-बार क्यों मरना

उसने पूछा
हम बार-बार क्यों मरते है
मैंने उससे पूछा -
हम बार-बार काम क्यों करते है,
उसने कहा-
प्रश्न का जवाब
प्रश्न नही होता
मैंने कहा-
आपके प्रश्न का जवाब
मेरे प्रश्न के उत्तर में है,

उसने कहा-
हमने अच्छे से
काम नहीं किया
इसीलिए
हम बार-बार करते है,
मैंने कहा-
हमने भी अच्छे से
जीवन नहीं जिया
इसलिए
हम बार-बार मरते है

ज़िन्दगी और मौत

जिन्दगी का अंत
मौत के आने पर होता है
और
नयी जिन्दगी की शुरुआत भी
मौत के बाद ही होती है,
अगर जिन्दगी मिली है तो
मौत भी मिलेगी
और
मौत मिली है तो
जिन्दगी भी मिलेगी
ये मेरा नही
प्रकृति का नियम है
वस्तु का स्वभाव है

जी रहे हैं

कुछ लोग
मौत की दहशत में
जी रहे है,
कुछ लोग
मौत के स्वागत में
जी रहे है,
कुछ ऐसे भी है
हमारे जैसे
जो न दहशत में जी रहे है
न स्वागत में
वो तो जिन्दगी का
पल-पल जी रहे है

मौत से नहीं डरता हूँ

मौत से
उन्हें ही डर लगता है
जिन्हें कुछ छूटने का
डर रहता है,
मैं मौत से नही डरता हूँ
क्योंकि
जो वह मुझसे
छीनना चाहती है
उसे मै छोड़ चुका हूँ
और
जो मेरा है
उसे वह कभी छीन नहीं सकती है

मत रोना

मौत की आहट सुनकर
तुम रोना मत
और
अपना होश भी खोना मत
तभी तुम मौत को
जीत पाओगे,
नहीं तो बार-बार
जीते
और
मरते ही जाओगे

जीना-मरना

जिसे भी
बार-बार नहीं मरना है
उसे इस बार
जम के जीवन जीना है,
जिसे भी
बार-बार मरना है
उसे तो सिर्फ
गम का जीवन जीना है

आत्महत्या

आपकी झंझटों को नही मारती
वह तो मारती है
परिवार की खुशियों को
आपकी उमंग, उल्लास और संबंधों को,
झंझटें तो ज्यों कि त्यों रहती है
और आपके ही साथ
आगे तक जाती है,
इसीलिए
आत्महल्या आपका मित्र नहीं
शत्रु ही है

मौत के बादल

खुशी के
हर मंज़र को
बहुत अच्छे से जीना मेरे मित्रों !
कोई नहीं जानता
किस मोड़ पर
मौत के बादल मंड़रा रहे हों

साधुता

जन्म और मरण
हम पहले से
लिखाकर आते है,
लेकिन
बीच का वक्त अगर हमने
साधुता से जी लिया
तो फिर
जन्म और मरण
कभी नही होगा

समय का खेल

समय का खेल
बहुत निराला है
आज किसी और के
जाने का वक्त है
कल तुम्हारा और हमारा
वक्त आने वाला है,
जा इसे समझकर
खुद की रक्षा कर लेता है
उसका वक्त
सच में निराला हो जाता है

मर जाते हो

तुम
बचपन का आनंद
नहीं लूट पाते हो,
जवानी को
नहीं समझ पाते हो,
दूसरों को
जवाब देने में ही
लग जाते हो,
हर बार की तरह
फिर बूढे होकर
मर जाते हो

संग्रह

तुम जिसे जोड़ रहे हो
उसे यहीं रह जाना है,
जब सब यहीं रह जाना है
तब हम क्यों हैरान-परेशान हो,
जोड़ना ही है
तो उसे जोड़ो
जो तेरे साथ जाना है,
क्योंकि
मौत के आगे
न किसी की चल पाई है
न ही चल पाना है

मौत कैसी होगी

उसने पूछा-
हमारी मौत कैसी होग,
मैंने कहा-
जैसी तुम
जिन्दगी जिओगे
तुम्हारी मौत भी
वैसी ही होगी,
जानवरों की तरह जिओगे
तो जानवरों की तरह मरोगे,
इंसानों की तरह जिओगे
तो इंसानों की तरह मरोगे,
भगवान की तरह जिओगे
तो भगवान की तरह मरोगे

नादानता

इंसान भी कितना नादान है
जिन्दगी
और मौत की लड़ाई में
जीतती मौत ही है,
फिर भी
नादान इंसान
जिन्दगी को जिताने में
सारी जिन्दगी लगा देता है

मेरे द्वार पर आएगी

मौत
कभी बोलकर नहीं आती
मगर
जब वह आती है
तब
सबको उसके आने का पता
चल जाता है,
मौत के लिए
सभी का द्वार खुला है
आज वह
किसी और के द्वार पर आई है
कल वह
मेरे द्वार पर आएगी

ज़िन्दगी की शाम

आज मार्ग पर चलते चलते
जब मैंने
नन्ही सी गिलहरी को
मृत अवस्था में देखा
तब मेरे मन में ख्याल आय—
जिन्दगी को
खुश होकर
बड़े ही संभल-संभल करजिओ
ना जाने
किस मोड़ पर
जिन्दगी की शाम हो जाए

कला मरने की

चिड़िया के पास
मैने उड़ने की कला देखी,
मीन के पास
मैंने तैरने की कला देखी,
शार्दूल के पास
मैंने भागने की कला देखी,
बगुले के पास
मैंने स्थिर रहने की कला देखी,
मनुष्यों के पास भी
मैंने विचित्र कलाएँ देखी,

लेकिन
जीने-मरने की कला
किसी-किसी के पास ही देखी,
यह सब देखकर
अब मैं
सिर्फ जीने की कला सीख रहा हूँ,
क्योंकि
जिसके पास
जीने की कला है
मरने की कला भी
वही सीख पाता है

मौत का संदेश

मौत की धमकी से क्या डरना
उसका तो काम ही डराना है,
मौत कोई झूठ नहीं
ये तो सच का इकरार नामा है,
मौत ने कहा मुझसे
शान्त हो जाओ
मुझे कुछ कहकर जाना है -
यहाँ कोई किसी का नहीं है
तुम्हें अपना जनाज़ा
खुद ही उठाना है

अपनी सी लगेगी

सोते रहोगे
तो मौत तुम्हें शत्रु लगेगी,
जागते रहोगे
तो मौत तुम्हें मित्र लगेगी,
मानो या न मानो
अपने में रहोगे
तो मौत तुम्हें अपनी सी लगेगी

हम होंगे

हजारों महफिलें होंगी
हजारों कारवाँ होंगे
दुनिया हम को जरूर ढूँढेगी
जब हम यहाँ नही होगें,
कौन कहता है
हम नहीं होंगे
तुम जब-जब आँखे बंद करोगे
हम तब-तब वहाँ वहाँ होंगे

शिक्षा

उसके जाने का गम नहीं मुझे,
क्योंकि
वह गम नहीं
शिक्षा देकर गया,
वह कह गय—
मैं तो गया
अब तेरा नंबर आ गया

काम आयेगी

न वैद्य काम आयेंगे
न दवा काम आयेगी,
जिस दिन मौत आयेगी
तेरी आत्मा तेरे काम आयेगी

असफल हुआ

मौत को रोकने की
न कोई दवा है
न कोई दुआ है,
जिसने भी इसे
रोकने का प्रयास किया
वो हमेशा
असफल ही हुआ है

एक की कमी

उसने कहा -
किसी एक के जाने से
हमारी जिन्दगी
रूक नही जाती,
मैंने उससे कहा -
लाखों के मिल जाने से भी
उस एक की कमी
कभी पूरी नही हो पाती

सीख लो

मरने पर भी
जिन्दा रहना हो तो
दूसरों के दिलों में
रहना सीख लो,
ये कफन
ये ज़नाजे
ये रिश्ते-नाते
सिर्फ बातें ही
मरना तो है ही
मरकर भी जिन्दा रहना सीख लो

आते-जाते

मंजिल तो तेरी भी
यही थी
बस जिन्दगी गुजर गई
मंजिल तक
आते-आते,
जरा सोच जरा सोच
क्या मिला तुझे
इस झूठी दुनिया से
अपनों ने ही जला दिया तुझे
जाते-जाते

मौत अच्छी है

जिन्दगी का कारोबार मुझे
सच में नही भाता,
वो हर दिन मारा करती है
जीने की बात बताया करती है,
मौत अच्छी है
बहुत अच्छी है
सच दिखाती है
चुपचाप आती है
अपना कारोबार करके
चुपचाप साथ ले जाती है

मृत्यु और मोक्ष

सांसे समाप्त होना
पर इच्छाओं का बना रहना मृत्यु है,
सांसों का बाकी रहना
पर
इच्छाओं का समाप्त हो जना मोझ है

सच्चा नाम

जिन्दगी सुबह है
तौ मौत शाम है,
जिन्दगी कक्ष है
तो मौत लक्ष्य है,
जिन्दगी गुमनाम है
मौत ही सच्चा नाम है

मौत नहीं मिलेगी

जीते है हर कोई यहाँ
जीने के लिए
मगर
हम जैसे लोग जीते है यहाँ
एक बार अच्छे से
मरने के लिए,
एक बार मर गए
तो जिन्दगी नहीं मिलेगी
जिन्दगी नहीं मिलेगी
तो मौत भी नही मिलेगी

घबराना नहीं

जब जीवन मिला था
तब मैं बहुत भोला था,
तुझे जैसा मरना है
वैसा ही जीना होगा
ये जीवन ने बोला था,
मौत आयेगी जरुर आयेगी
घबराना नहीं,
मैं छोड़कर जा रहा हूँ
इस जमाने में
वो लेकर जायेगी
घबराना नही इस जमाने से

सच्चा दोस्ताना

जन्म का काम लाना है
मौत का काम ले जाना है,
ऐसा साचेकर
हम जन्म को मित्र मानते है
मौत से रुठ जाते है
लाना-ले जाना बंद नही होता,
क्योंकि
मौत से हमारा सच्चा दोस्ताना नहीं होता

मौत की जीत

मैंने कई बार षड्यंत्र रचा
मौत से जीतने का
मेरे साथ-
औषधि की सेना थी
मंत्र के मंत्री थे
तंत्र के संत्री थे
ताबीजों के शस्त्र थे
अगरबत्ती और नारियल के हथ गोले थे
फिर भी मौत से जीत न पाया,
फिर कहा मौत ने -
मुझसे जीतना है तो
मन को मारो
मुझ को स्वीकारो
तभी होगी तुम्हारी जीत
तभी होगी तुम्हारी मुझे से प्रीत

हमारी ही कमी

जब हम आते है
तब बचपन, जवानी और बुढापा
साथ लेकर आते है,
जब हम जाते है
तब तीनों यहीं रह जाते है
मरते हम बचपन में भी है
मरते हम जवानी में भी है
मगर
दोष बुढापे को देकर जाते है,
शायद
ये हमारी ही कमी रही होगी
मौत का क्या
वो हमेश सही रही होगी

मौत खड़ी होगी

हम हर रोज जीते है
इसलिए हर रोज मरते है,
फिर भी न जाने क्यों
हम मौत से डरते है,
जिन्दगी जैसी होगी
मौत भी वैसी ही होगी,
जिन्दगी की हर चाल के पीछे
हमेशा मौत खड़ी होगी

आधी नींद में

जो जीवन को सोते-सोते बिताते है
उन्हें एक दिन
मौत आकर जगाती है,
जब तक वो जागते है
तब तक देर हो जाती है
और
मौत उन्हें हमेशा की तरह
आधी नींद में ही ले जाती है

स्वागत मौत का

स्वागत करो उसका
जिसे आना है,
मगर तुम
स्वागत करने में लगे हो उसका
जिसे हर रोज जाना है,
यही कदम तुम गलत रखते हो
इसलिए
जीने की चाह रखकर भी
हर बार मरते हो,
मेरी मानो
सही कदम रखो
जन्म का नही
मौत का स्वागत करो

खुद की जीत

हमारा यहाँ
बार-बार आने का सिलसिला
खत्म नही हो पा रहा है,
क्योंकि
आते हम रोते हुए है
और
जाते भी हम रोते हुए है,
मेरी मानो
इस बार सब ठान लो
जैसे आए थे
वैसे नहीं जायेंगे
जिन्दगी और मौत दोनों को हराकर
खुद को जितायेंगे

कब तक

हम सोचते है
कभी मौन न आये,
मौत सोचती है
ये सोच हमारे अंदर से
जल्द चली जाये,
फिर भी मैंने पूछा
एक दिन मौत से –
तुम बक तक आती रहोगी
मुझे सतातती रहोगी,
मौन ने कहा –
अगर तुम मुझसे
इतना परेशान हो
तो जन्म से दूर हो जाओ
मैं भी तुम से दूर हो जाऊँगी

मरण ही शरण

मृत्यु मरण नही
शरण है,
शाम नहीं
सच्चा धाम है,
जीवन तो तुम्हे अपनाकर
भटकाता है
रुलाता है
क्या-क्या दिन नहीं दिखाता है,
मगर मौत
मौत तो चुपचाप आती है
इधर-उधर नहीं भटकाती
जो जीवन भर किया है
आगे का जो पता लिखा लिया है
वहाँ छोड़कर चली जाती है

बिखर जाता है

लोग बुलतो है
हिलाते है
मगर
वो न कह पाता है
न हिल पाता है,
उड़ना तो दूर
उठना भी मुश्किल हो जाता है,
जब मौत करीब आती है
दिखते सब इकट्टे है
मगर
सब कुछ बिखर जाता है

रोना क्यों

मृत्यु होने पर रोना नहीं
हमेशा यही सोचना,
ये संसार की यात्रा है
इसमें
हम वापसी का टिकट
साथ में लाते है
और
जब जाना ही
तो रोना क्यों

हर्ष-विषाद

दुनिया की नज़रो में
जन्म
हर्ष का दिन है
और मृत्यु
विषाद का दिन है,
लेकिन
इतना जरुर ध्यान रखना
हर्ष न होगा
तो विषाद भी न होगा

फरमान

यदि
मौत का फरमान आ जाये
तो दुनिया में
ऐसा कोई वकील नहीं
जो उस पर रोक लगा पाये

हार-जीत

जिन्दगी और मौत की लड़ाई में
जीतती हमेशा
मौत ही है,
फिर भी
न जाने क्यों
हम पूरी जिन्दगी
जिन्दगी को जिताने
और
मौत को हराने में लगा देते है

सच

जन्म तो झूठा है
सच तो सिर्फ मौत है

एक और मौत

सांसों का रुक जाना
मौत है
ऐसा हम जिन्दगी में
एक बार मरते है,
अपनों का बदल जाना भी
एक मौत है
ऐसा हम जिन्दगी मैं
बार-बार मरते है

मंज़िल

सफर को
मंजिल न समझना
मंजिल तो सफर के बाद है,
भूलना नहीं याद रखना
जिन्दगी सफर है
मंजिल तो मौत के बाद है

मित्र

जीवन और मरण
एक दूसरे के मित्र है,
मगर हम
एक को मित्र
एक को शत्रु मानते है,
जहाँ जीवन पहुँचता है
पीछे से मरण आ जाता है
और
जैसे ही मरण आता है
वैसे ही जीवन भी
अपना हम जताने आ जाता है

चैन से, ठाठ से

चैन से वो ही मर पाता है
जो चैन से जी पाता है,
ठाठ से वो ही मर पाता है
जो ठाठ से जी पाता है,
इसका साफ-साफ यही मतलब है
जैसा जीवन जिओगे
वैसा ही मरण के समय रहोगे

राख

मैंने देखा है
छोटों को भी, बड़ो को भी,
पैसों या रुतबों से बनी साख
सांसे टूटते ही हो जाता है खाक,
कितनी ही छोटी या बड़ी हो साख
मरते ही सबकी हो जाती है राख

सभी है इंसान

मौत जब भी आती है
सभी को एक जैसा पाती है,
वो नही देखती
नहीं सोचती
तुम गरीब हो या अमीर
कमजोर हो या पहलवान
मौत के लिए सभी है इंसान

मौत का ऐलान

दुनिया कितना ही मनाये
मौत किसी की बात नहीं मानती,
अनजान सी हो जाती है
किसी को नहीं जानती है,
बस आते ही
चलो-चलो यह करती है ऐलान,
बेबस दुनिया
हर बार की तरह मान लेती है फरमान

टूट जाते हैं

मौत के आते ही
सब का सब यहीं छूट जाता है,
वर्तमान भूत हो जाता है
भविष्य खो सा जाता है,
जीवन में बांधे गए सारे बांध
फूट जाते है,
खुद के अस्तित्व के महल
पल भर में टूट जाते है

अपना किस्सा

जब मौत सामने आयेगी
तुम सब भूल जाओगे,
सन्नाटे की दुनिया में
तुम कुछ ऐसा खो जाओगे,
दुनिया स्वार्थी कहेगी
फिर भी सब सह जाओगे,
तुम कहाँ हो
कैसे हो
ये कोई नही जान पाएगा,
न तुम हँसोगे
न तुम रोओगे
अपना किस्सा जाने के बाद
तुम खुद बयाँ करोगे

लेकर जायेगी

मानो या न मानो
मौत जरुर आयेगी,
चाहो या न चाहो
अपना जलवा जरुर दिखायेगी,
तडफ के जाओ या शान्त होकर
वो आई है लेकर तो जायेगी

एक दिन

पलक झपकते ही
परिवर्तन हो जाता है,
घंटों-घंटो बोलने वाला
एक-एक शब्द का मोहताज हो जाता है,
चीखती नही, चिल्लती नही
मगर आती जरुर है,
मौत एक दिन
सबको ले जाती जरुर है

हवा चीरकर

चूहे से डरने वाला
शेर से नही डरता,
यात्रा करने वाला
थोडा भी नही हिलता,
हर किसी से मिलने वाला
निस्तेज पड़ा रहता है,
मौत को गले लगाने वाला
हवा को चीरकर उडता है

अमीर-गरीब

जो मौत के करीब होता है
वो अमीर होकर भी
अमीर नहीं होता है,
सारी दौलत-धन-खजाना
परिवार -रिश्तेदार-गुरुर
यही धरा रह जाता है,
मौत जब करीब आती है
तब हर कोई गरीब हो जाता है

जीना-मरना

जीना कई लोगों को आता है
मगर
मरना कुछ ही लोग जानते है